2 जून 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विलेपार्ले मुम्बई में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

● देश-विदेश से हजारों भक्तों की उपस्थिति ● उत्कृष्ट व्यवस्था एवं सुनियोजित संचालन ● शताधिक विद्वानों की ऐतिहासिक उपस्थिति ● पंचकल्याणक के मनोरम दृश्य एवं भव्य सांस्कृतिक-आध्यात्मिक कार्यक्रम ● अनेक ग्रन्थों/सी.डी.-डी.वी.डी., चित्र नि:शुल्क प्रभावना हेतु वितरित ● मुमुक्षु समाज की सभी संस्थाओं का अद्भुत समन्वय ● मनोहारी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, तीर्थधाम स्वर्णपुरी रचना एवं गुरुदेवश्री की जीवन्त प्रतिकृति।

मुम्बई : यहाँ विलेपार्ले (वेस्ट) में नवनिर्मित भव्य उत्तंग श्री सीमन्धरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में विराजमान होने वाले वीतरागी जिनबिम्बों की प्राणप्रतिष्ठा श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में हुई।

इस अवसर पर **श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** रविवार, दिनाँक 17 मई 2015 से शुक्रवार 22 मई 2015 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों एवं आशातीत उपलब्धियों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ। यह मंगल महोत्सव अन्धेरी स्थित हंसराज मोराजी पब्लिक स्कूल और जूनियर कॉलेज, भवन्स कॉलेज के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर भव्य वातानुकूलित पाण्डाल एवं प्रवेश द्वार की शोभा देखते ही बनती थी। देश के लगभग सभी प्रान्तों से तथा विदेशों में अमेरिका, लन्दन, कनाडा, दुबई, मस्कट, अफ्रीका आदि देशों से पधारे लगभग 20 हजार साधर्मियों के साथ-साथ मुम्बईवासियों ने भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहकर जिनशासन की प्रभावना में अभूतपूर्व योगदान दिया।

इस महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों व बहिनश्री के वीडियो तत्त्वचर्चा के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित प्रकाशभाई कोलकाता, पण्डित अश्विनभाई मुम्बई, पण्डित शैलेषभाई

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

49वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थंकर महावीर मार्ग स्थित जैन बोर्डिंग हाउस में रविवार, दिनांक 24 मई से बुधवार, दिनांक 10 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 49वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत भव्यता के साथ एवं हर्षोल्लास पूर्वक चल रहा है।

दिनांक 24 मई को शिविर का ऐतिहासिक उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। इस प्रसंग पर प्रात:काल जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें पूरे हिन्दुस्तान से पधारे हुए युवक-युवतियों और साधर्मियों ने भाग लिया।

समारोह की अध्यक्षता श्री नवीनजी जैन सर्राफ ने की। मुख्य अतिथि श्री पवनजी जैन मंगलायतन, शिविर के संरक्षक लाला अभिनन्दन प्रसादजी जैन रईस सहारनपुर, महोत्सव गौरव श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली थे। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री सौरभ-पूजा जैन (मैसर्स नवकार टैक्सटाईल), शिविर उद्घाटनकर्त्ता श्री अजीतप्रसादजी जैन दिल्ली थे। श्री सौरभ जैन रोहित जैन परिवार (मैसर्स नवकार टेक्सटाईल) के करकमलों से ध्वजारोहण किया गया।

इस अवसर पर चौबीस तीर्थंकर महामंडल विधान का आयोजन किया गया, जिसके आमंत्रणकर्त्ता श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन अम्बुज जैन महावीर नगर, विधान के उद्घाटनकर्त्ता श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन दिल्ली थे।

समारोह में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निखलेशजी शास्त्री, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, श्री संदीपजी दिल्ली, श्री ऋषभजी दिल्ली, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित राजकिशोरजी, पण्डित मनीषजी, पण्डित शाकुलजी, पण्डित निखिलजी आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री प्रमोदजी जैन बड़ौतवाले दिल्ली, श्री अजितकुमारजी जैन जयपुर, श्री कमलदत्तजी शर्मा, श्री अनिलजी जैन इलेक्ट्रोवाले ब्रह्मपुरी, श्री मुकेशजी जैन

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

सम्पादकीय -

ज्ञान और सुदर्शन की विज्ञान से हुई वार्ता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

डॉक्टर साहब यह भी तो कह रहे थे कि -''अभी भी ऐसा कुछ नहीं बिगड़ा, जिसका उपचार न हो सके, जो ठीक न हो सके। परन्तु यदि इसी तरह कुछ दिन और चलता रहा और 'पानी सिर से गुजर गया' तो फिर भगवान भी नहीं बचा पायेंगे तुम्हें, इतना अवश्य समझ लेना। समझदार को तो संकेत ही काफी होता है।''

डॉक्टर की बातें सुन-सुनकर उनके वयोवृद्ध कम्पाउन्डर चाचा से चुपचाप बैठा नहीं रहा गया और उन्होंने भर्राये हुये गले से गद्-गद् होकर ज्ञान और सुदर्शन के सुखी जीवन का उल्लेख करते हुये विज्ञान से कहा -''देखो न विज्ञान ! आज ज्ञान और सुदर्शन की घर में, परिवार में और समाज में भी कितनी इज्जत है? कितना आदर-सम्मान देते हैं लोग उन्हें ?

और एक तुम हो, जिससे कोई भला आदमी बात करना भी पसन्द नहीं करता। जबकि आज तुम्हारे पास भगवान का दिया सबकुछ है। क्या नहीं है तुम्हारे पास - कोठी, बंगला, मोटरगाड़ी, कल-कारखाने, नौकर-चाकर, मुनीम-गुमास्ते सभी कुछ तो है और तुम्हारी तुलना में उन लोगों के पास क्या है ? कुछ भी तो नहीं है। न बंगला, न गाड़ी; फिर भी लोग उनकी इज्जत करते हैं। सोचा कभी ? ऐसा क्यों है ?

इससे स्पष्ट है कि दुनिया में आज भी गुणों का ही आदर है, धन-वैभव का नहीं। भले ही तुम धनी हो, पर तुम्हारे धन से दुनिया को क्या लेना-देना है। घोड़े की पूँछ लम्बी होती है तो उससे वह अपनी ही मक्खी तो भगा सकता है, सवार को उसकी लम्बी पूँछ से क्या लाभ ?''

कम्पाउन्डर चाचा ने आगे कहा -'जो चन्द्रमा पर थूकने की कोशिश करता है, सारा थूक लौटकर उसके मुँह पर ही गिरता है न ? चन्द्रमा का उससे क्या बिगड़ता है ? कुछ भी नहीं।

तुमने और तुम्हारे साथियों ने ज्ञान और सुदर्शन की हँसी भी उड़ाई, मजाक भी बनाया, अनादर और उपेक्षा भी की, तो भी वे तुमसे नाराज नहीं हुए, उससे उनका बिगड़ा भी क्या ? कुछ नहीं, उल्टे दुनिया की नजर में तुम ही हँसी के पात्र बन गये।

कितने भले आदमी हैं वे। कभी किसी की बुराई करना और कभी किसी पर क्रोध करना तो वे जानते ही नहीं हैं और एक तुम लोग हो जो चौबीसों घण्टे अपनी स्वार्थ साधना में ही लगे रहते हो। तुम्हें तो अपने ऐशो-आराम और मौज-मस्ती से ही फुरसत नहीं है, तुम किसी का परोपकार क्या करोगे ?'

उस दिन उनकी बातों का विज्ञान के दिलो-दिमाग पर काफी असर हुआ ? वह चुपचाप घर चला गया।

उस रात्रि में अपने शयन कक्ष में पड़े-पड़े कम्पाउन्डर चाचा की बातों पर विचार करते-करते ज्यों ही उसकी पलकें झपकी कि वह स्वप्नलोक में विचरने लगा।

स्वप्न में उसने सुदर्शन को फिर सामने खड़े देखा, जो कह रहा था -''विज्ञान ! तू जिसे आधुनिक सभ्यता समझ बैठा है, वह सभ्यता नहीं, असभ्यता की पराकाष्ठा है। क्या सातों व्यसनों का सेवन करने का नाम ही सभ्यता है ? क्या माँस, मदिरा का सेवन करना ही सभ्यता है ? क्या 'कॉलगर्ल्स' के नाम से आहूत पराई बहिन-बेटियों की मजबूरी का नाजायज फायदा उठाना और उन्हें सदा के लिये नरक के द्वार में धकेल देने का नाम ही सभ्यता है ?

अरे ! ये दूसरों के नहीं, वरन् अपने नरक के द्वार खोलना है।

मैं पूछता हूँ कि यदि यही सब सभ्यता है तो फिर असभ्यता क्या है ?

यदि कोई हमारी बहिन-बेटियों से ऐसा दुर्व्यवहार करे तो हमें कैसा लगेगा ? जरा इस आइने में झांक कर तो देखो ! फिर तुम्हें जो ठीक लगे सो करो।

अरे भाई ! किसी ने ठीक ही कहा है -''आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो अपने को अच्छा न लगे - ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ मत करो।''

सुदर्शन कहे जा रहा था और विज्ञान नीची गर्दन किये सुने जा रहा था।

सुदर्शन ने समझाते हुये आगे कहा -''जरा सोचो, समझो, मैं तुम्हारा बालसखा हूँ, कोई शत्रु नहीं। इधर तुम्हें इस हालत में देखकर और उधर तुम्हारी पत्नी को तुम्हारी दुर्दशा के कारण दु:खी देखकर मुझे भारी वेदना होती है। बस, इसीलिये मैंने तुमसे कठोर भाषा में इतना सब कुछ कह डाला है। इस कारण यदि तुम्हारा दिल दु:खा हो तो मेरे मित्र ! मुझे माफ कर देना।''

सुदर्शन की अत्यन्त प्रेरणादायक बातें सुनकर विज्ञान पानी-पानी हो गया। उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। पश्चाताप की अग्नि में तपकर उसका हृदय बहुत कुछ परिवर्तित हो गया था, इसकारण अब उसका मानस सुदर्शन की हर बात मानने को तैयार था, पर उसके सामने पहाड़ जैसी परेशानियाँ खड़ी दिखाई दे रही थीं।

उसने साहस बटोरकर आँसू पोंछते हुए सुदर्शन से कहा - ''भाई ! तुम्ही बताओ - मैं करूँ तो करूँ भी क्या ? मैं इस आधुनिक सभ्यता की दौड़ में इतना आगे पढ चुका हूँ कि जहाँ से वापिस लौटने की मुझे कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती।''

कहते-कहते वह फूट-फूटकर जोर-जोर से रोने लगा। उसकी रोने की आवाज सुनकर उसके बगल में सो रही उसकी पत्नी विद्या की नींद खुल गई। उसने विज्ञान को आज तक कभी रोते नहीं देखा था। इसकारण वह भी भावुक हो उठी और उसका भी गला भर आया। विज्ञान की पीठ पर प्रेम से हाथ फेरते हुये उसने धीरे से पूछा -''क्या बात है ? अभी तक सोये नहीं ? कोई भयानक स्वप्न देखा है क्या ? आज आपको यह क्या हो गया है? पहले तो मैंने आपको कभी ऐसा रोते नहीं देखा। ये आँखें लाल-लाल कैसे हो गई हैं ? आप तो महिलाओं की तरह फूट-फूटकर और सिसक-सिसककर ऐसे रो रहे हो जैसे कोई महान अनर्थ हो गया हो; आखिर बात क्या है ? कुछ कहो भी तो !''

एकसाथ अनेक प्रश्न सुनकर आँसू पोंछते हुये और सिसकियाँ संभालते हुये विज्ञान ने कहा -''विद्या ! मैं क्या बताऊँ मुझे क्या हो गया ? बिचारे सुदर्शन और ज्ञान मेरी चिन्ता में कितने परेशान रहते हैं, मेरे भले के लिये न जाने क्या-क्या सोचा करते हैं, क्या-क्या योजनायें बनाया करते हैं। कल मेरी उनसे अनायास भेंट हो गई, तो दोनों ने मुझे एक घण्टे तक समझाया और अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये। उनके कल के विचारों से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ।

वहाँ से लौटते समय मैंने सोचा -'चलो, डॉक्टर के यहाँ से एक्स-रे की रिपोर्ट ही लेता चलूँ - वहाँ गया तो डॉक्टर ने जो कुछ कहा, उससे तो मेरी सारी हिम्मत ही टूट गई।'

उन्हीं सब समस्याओं के विकल्प में उलझ जाने से मैं अनेक संभावित-असंभावित चिन्ताओं के घेरे में घिरा रहा। बस इसी उधेड़बुन में रात के दो बज गये। जैसे-तैसे पलक झपके ही थे कि मैं स्वप्न-संसार में पहुँच गया और वहाँ फिर सुदर्शन से भेंट हो गई। वह बहुत कुछ तो पहले प्रत्यक्ष में समझा चुका था, रही-सही कसर उसने स्वप्न में पूरी कर दी। उसे सुनकर मैं इतना भावुक हो उठा कि वास्तव में ही फूट-फूटकर जोर-जोर से रोने लगा हूँ।

विद्या ! सुदर्शन ने अभी-अभी स्वप्न में मुझे जो मार्गदर्शन दिया है, उसने मुझे ऐसा झकझोरा है कि मेरी नींद तो खुल ही गई, हृदय की बंद आँखें भी खुल गई। उससे मुझे एक नया दिव्य प्रकाश मिला है।

वैसे भी इन दिनों उन दोनों की मेरे ऊपर बहुत ही स्नेहभरी दृष्टि है। उन्हें जब-जहाँ भी अवसर मिलता है, मेरा मार्गदर्शन अवश्य ही करते हैं, परन्तु खेद है कि मैं अब तक उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दे पाया हूँ।''

धैर्य बंधाते हुये विद्या बोली - ''घबराओ मत ! यदि तुम चाहोगे तो सब रास्ते निकल आयेंगे। अभी तक तो तुम्हारी ही समझ में नहीं आ रहा था, इसकारण कोई भी व्यक्ति तुम्हारी सहायता कैसे कर सकता था ? यदि तुम स्वयं स्वेच्छा से उन झंझटों से मुक्त होना चाहते हो, तो दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है। अभी तो सो जाओ। यदि इसी उधेड़बुन में शेष रात और बीत गई तथा नींद पूरी न हो सकी तो सवेरे सिरदर्द करने लगेगा।''

विज्ञान बोला -''ये तो ठीक है , पर यह भी बताओ - मैं उन मित्रों से बचूँगा कैसे ? जिनके साथ मेरा व्यापारिक सम्बन्ध है, दिन-रात साथ-साथ उठना-बैठना है, लेन-देन का व्यवहार है, उनसे मिले बिना कैसे चलेगा ? अत: अब मैं चाहूँ तो भी उस दलदल से नहीं निकल पाऊँगा। मैं उनसे ना भी मिलूँ तो वे सब कोई न कोई बहाना सोचकर मेरे पास यहाँ आ धमकेंगे। और कुछ नहीं तो मेरी तबियत का समाचार पूछने के बहाने ही आ जावेंगे। उनसे बचने का उपाय मेरी समझ में नहीं आ रहा है। वे मुझे यों ही आसानी से छोड़ने वाले नहीं हैं।

विद्या ! मेरी स्थिति तो अब साँप-छछूंदर जैसी हो गई है, साँप मुँह में दबाये हुये छछूंदर को न तो निगल सकता है और न उगल सकता है। निगलता है तो पेट फटता है और उगलता है तो अन्धा हुआ जाता है।

बस, इसी तरह यदि मैं उनका साथ छोड़ता हूँ तो भी मुसीबत, और नहीं छोड़ता हूँ तो भी मुसीबत। साथ छोड़ने पर पता नहीं वे क्या-क्या हथकण्डे अपनायेंगे। सम्भव है वे मेरे साथ तुम्हें भी धर्मसंकट में डाल दें।''

(क्रमश: अगले अंक में...)

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(तेरहवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि **किस प्रकार हमारी आजतक की ''मैं'' की परिभाषाएं आधी–अधूरी हैं और ''मैं'' का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं। उनमें क्या दोष है और ''मैं'' की सही परिभाषा क्या है,** यह जानने के लिये पढिये –

जिस क्षेत्र की अपेक्षा मुझे भारतीय, राजस्थानी कहा जाता है वह तो परिवर्तनशील है, यह तो मेरे यहाँ से वहाँ होते ही बदल जाते हैं, तब वे मेरी पहिचान कैसे हो सकते हैं ?

मैं जिन बाह्य वैभव के संयोग या वियोग के कारण धनवान या गरीब कहलाता हूँ, वे तो मुझसे अत्यंत भिन्न हैं, वे न तो मेरे समान चेतन हैं और न ही मेरी इस देह का कोई हिस्सा, वह वैभव तो पुद्गल होते हुये भी मेरे इस पुद्गल की बनी हुई देह से भी सर्वथा भिन्न है, तब वह ''मैं'' कैसे हो सकता हूँ, वह दौलत मेरी पहिचान या परिभाषा कैसे बन सकती है ?

दुबला–मोटा, गोरा–काला, लम्बा–नाटा भी मैं देह की स्थिति के कारण कहलाता हूँ और वह भी दूसरों के सापेक्ष। जब मैं चेतन हूँ और यह देह जड़ तो इसका स्वरूप मेरी पहिचान कैसे हो सकती है ? मैं अपने मनोभावों की अपेक्षा से क्रोधी–शांत, भयभीत या निर्भय और कायर या वीर कहलाता हूँ, पर ये मनोभाव तो मेरे निरपेक्ष स्वभाव नहीं हैं, ये तो संयोगों के लक्ष्य से उत्पन्न क्षणिक भाव हैं, ये मेरी पहिचान, मेरे नाम कैसे हो सकते हैं ?

मेरे उक्त सभी कथित नाम या परिभाषाएं समय, स्थान और संयोग–वियोग के साथ–साथ बदल जाते हैं पर मैं तब भी बना रहता हूँ, तब ये सब मेरे नाम, मेरी परिभाषाएं और मेरा स्वरूप कैसे हो सकते हैं।

मैं तो वह हूँ जो बना रहूँ, कभी नष्ट न होऊँ। हर स्थान पर वैसा ही रहूँ, वही रहूँ। जो सदा रहूँ, एक जैसा रहूँ। जिसके होने के लिये किसी के होने या न होने की अपेक्षा न हो और जो मैं हूँ वह कोई और न हो।

मेरा वह नाम मेरी परिभाषा (लक्षण) बन सकता है जो सदा, सर्वत्र अपरिवर्तनीय रहे एवं जो अनन्य और अद्वितीय हो।

मुझे दिये गये उपरोक्त कोई भी नाम, मेरे लक्षण होने की उक्त कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं, इसलिये मैं वो नहीं। वो ''मैं'' नहीं।

अब तक ऊपर हमने ''मैं'' के जिन–जिन नामों की चर्चा की उनमें मात्र ''मनुष्य'' ही एक ऐसा नाम है जो हमारे वर्तमान जीवन में हर स्थान पर, हर समय और हर हाल में सत्य है अन्य तो सब यहाँ हैं वहाँ नहीं, अभी हैं कभी नहीं।

तो **क्या हम यह मान लें कि ''मैं मनुष्य हूँ ''?**

''मैं मनुष्य हूँ'' यह परिभाषा अब हमें समझ में आने लगी है, हम इसे स्वीकार करने को तैयार हैं; क्योंकि ''मेरा अब तक का अनुभव यह कहता है कि मेरी यह परिभाषा कभी भी गलत नहीं होगी। देश–काल की परिस्थितियों के अनुरूप भले ही मेरे अन्य नाम बदलते रहें पर मैं मनुष्य तो सदा ही रहूँगा।''

नहीं ! यह भी सत्य नहीं है; क्योंकि यह अनन्य नहीं, अद्वितीय नहीं है, मैं मनुष्य हूँ यह सही है पर अन्य अनेकों और भी तो मनुष्य हैं।

भाई ! इस परिभाषा में भी तो ''अतिव्याप्ति'' दोष आता है।

यह तो सही है कि आप मनुष्य हैं पर सिर्फ आप नहीं, आपके अलावा भी मनुष्य तो अनेक हैं। यह तो सही है कि ''भारतीय रेलवे आपकी सम्पत्ति है'' पर सिर्फ आपकी नहीं; आपके जैसे ही अन्य सभी भारतीय नागरिकों की भी।

जैसे आपका वह मकान जिसकी रजिस्ट्री आपके नाम पर है, आपका है, वैसी ये भारतीय रेल आपकी नहीं है। यह आपकी भी है और सबकी भी, आपका मकान सिर्फ आपका है।

यही तो कारण है कि यदि कोई आपको ''हे मानव !'' कहकर पुकारे तो आप मुड़कर नहीं देखते हैं।

आपको यह लगता ही नहीं कि कोई आपको बुला रहा है।

जिस नाम से आप स्वयं अपने आपको नहीं पहिचानते हैं, आखिर वह नाम आपका कैसे हो सकता है ? इसीलिये आपने अपना एक अलग नाम रख लिया –''कमल या विमल'' तो क्या आपका यह नाम दोष रहित है ?

नहीं; क्योंकि भीड़ में यदि कोई आवाज लगाये ''कमल'' तो एक साथ 10–20 लोगों की गर्दन पीछे की ओर मुड़ जाती है। जाहिर है वे सभी कमल हैं।

तब आप अपना नमा ''कमल जैन'' लिखने लगे, पर उस भीड़ में कमल जैन भी 4 निकले। तात्पर्य यह है कि ये कोई भी नाम आपका अपना सम्पूर्ण अनन्य प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। चलिये मान लिया कि आपने अपने नाम के साथ अपने पिता का नाम और अपना सम्पूर्ण पता भी लिख लिया ''कमल पुत्र निर्मल, अ–10, बापूनगर, जयपुर वाले'', और अब वह मात्र आपकी ओर ही इंगित करता है।

तो क्या ''मैं'' की यह परिभाषा सही और दोष रहित है ?

नहीं।

क्यों ?

यह जानने के लिये पढिये इस शृंखला की अगली (चौदहवीं) कड़ी, अगले अंक में – (क्रमशः)

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2015 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें।

परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है –

परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग–1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक) + सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : गुणस्थान विवेचन
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक)

द्वितीय वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार–पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड –प्रथम अध्याय

तृतीय वर्ष –

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार–कर्ताकर्माधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड – गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर)

ध्यान रहे – परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर, नाम, स्थान एवं विषय का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर
(रविवार, दिनांक 2 अगस्त से मंगलवार 11 अगस्त, 2015 तक)

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

श्रुतपंचमी पर विचार गोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन साहित्य परिषद् की ओर से दिनांक 20 से 22 मई तक तीन दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

दिनांक 20 मई को सायंकाल एवरेस्ट कॉलोनी दिगम्बर जैन मंदिर में **'जैनधर्म दर्शन और संस्कृति–वर्तमान संदर्भ में'** विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. कलानाथजी शास्त्री एवं डॉ. संजीवजी गोधा ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने मार्मिक विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर डॉ. प्रेमचंदजी रांवका एवं श्री विनयजी पापड़ीवाल के उद्बोधन का भी लाभ मिला।

परिषद के अध्यक्ष श्री नवीनजी बज ने अतिथियों का परिचय दिया तथा अन्त में आभार प्रदर्शन श्री महेशजी चांदवाड़ ने किया। गोष्ठी के संयोजक श्री एस.एल.गंगवाल थे।

राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता-परिणाम घोषित

बानपुर (म.प्र.) : यहाँ जीवन शिल्प इण्टर कॉलेज द्वारा **'युवा धर्म से विमुख : कारण और निवारण'** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में 12 राज्यों से लगभग 150 निबंध आये। जिनमें से प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्तकर्त्ता को दिनांक 2 जून को मेरठ शिविर में पुरस्कृत किया जायेगा। जीवन शिल्प टीम द्वारा प्रथम दृष्ट्या 80 निबंध निकाले गये। उनमें से विशेषज्ञों द्वारा 30 निबंध निकाले गये। निबंध जाँचने के मापदंड 2000 शब्दसीमा, निबंध शैली, प्रस्तुतिकरण, आगमिक समझ, निष्पक्षता आदि थे।

निबंध प्रतियोगिता के श्रेष्ठ 14 नाम इसप्रकार हैं – 1. श्रीमती ऋतु वात्सल्य छिन्दवाड़ा, 2. जैन बालिका संस्कार संस्थान उदयपुर (ग्रुप), 3. प्रतीति जैन जयपुर, 4. कवि ज्ञानभास्कर जैन आगरा, 5. रुचि जैन धर्मपत्नी डॉ. अनेकान्त जैन दिल्ली, 6. रोशनी साहू ललितपुर, 7. सौ. निलीमा संजय डाखोरे वाशिम, 8. पारुल जैन बहादुरगढ, 9. विपाशा जैन बांसवाड़ा, 10. श्रीमती श्वेता जैन बीना, 11. श्री गुलाचंद वात्सल्य (म.प्र.), 12. सोनल जैन लखनऊ, 13. श्रीमती देशना जैन दिल्ली, 14. अखिलेश जैन मंगलार्थी।

– विकास शास्त्री, बानपुर

आगामी कार्यक्रम...

खनियांधाना (म.प्र.) में चेतनबाग स्थित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 20 जून तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें विद्यापीठ में प्रवेशार्थ 15 छात्रों हेतु छात्र चयन प्रक्रिया भी पूर्ण होगी। प्रवेश–इच्छुक छात्र 13 जून तक अवश्य खनियांधाना पहुँचे। **संपर्क सूत्र –** नंदीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ, चेतनबाग, खनियाधाना, जिला–शिवपुरी (म.प्र.) फोन – 08120090066, 09425633457, 09977644295

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दृष्टि का विषय

12 चतुर्थ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रवचनसार की ९३वीं गाथा की तात्पर्यवृत्ति टीका में लिखा है –

''अन्वयिनो गुणा: अथवा सहभुवा गुणा इति गुणलक्षणम्। व्यतिरेकिण: पर्याया अथवा क्रमभुव: पर्याया इति पर्यायलक्षणम्।''

ये क्रमश: गुण और पर्याय के लक्षण हैं। जब हमें पर्याय को दृष्टि के विषय में से हटाना है तो हमें उस पर्याय का स्वरूप जानना भी आवश्यक है और हमें जिन गुणों को दृष्टि के विषय में अभेदपने रखना है, उन गुणों का स्वरूप जानना भी आवश्यक है; क्योंकि वस्तु को स्वरूप (लक्षण) से ही पहिचाना जाता है।

''हम पर्याय के नाम पर गुणों को भी दृष्टि के विषय में से न हटा दें'', इसलिए भी इनका स्वरूप जानना आवश्यक है।

शास्त्रों में गुणों को भी पर्याय नाम से अभिहित किया जाता है। पर्यायें दो प्रकार की होती हैं – १. सहभावी पर्याय, २. क्रमभावी पर्याय। सहभावी पर्याय गुण को कहते हैं और क्रमभावीपर्याय पर्याय को कहते हैं। अतएव हम पर्याय के नाम पर सभी पर्यायों को भी दृष्टि के विषय में से नहीं निकाल सकते।

एक सामान्य वाक्य कहा जाता है कि 'सज्जनपुरुषों को महिलाओं की ओर दृष्टि नहीं डालनी चाहिए', तथापि महिला तो माँ भी है, पत्नी भी है, बहन भी है और बेटी भी है। यदि इनकी ओर निगाह नहीं डालेंगे तो इन्हें पहचानेंगे कैसे ? जबकि 'दशलक्षणधर्म पूजा' में तो द्यानतरायजी ने कहा है कि – **उत्तमब्रह्मचर्य मन आनौ, माता-बहिन सुता पहचानो।**

यहाँ महिला शब्द का आशय पर-स्त्रियों से है और दृष्टि डालने का आशय खोटी निगाह से देखना है। तात्पर्य यह है कि पर-स्त्रियों को खोटी निगाह से नहीं देखना चाहिए। इसका ऐसा अर्थ करना कि माता-बहिन भी महिलायें हैं; अत: उनकी ओर भी देखना ही नहीं चाहिए – ठीक नहीं है।

अरे भाई ! वहाँ 'महिला' यह सामान्य कथन है और विशेष कथन अलग बात है और सामान्य से विशेष बलवान होता है।

'सामान्य की अपेक्षा विशेष बलवान होता है' – इस कथन से संबंधित मेरा एक प्रसंग सोनगढ़ में बना था। जब मैं सोनगढ़ में नयचक्र की कक्षा लेता था। पूज्य गुरुदेवश्री भी उस कक्षा में आद्योपान्त बैठते थे। मुझसे पहले यह कक्षा पण्डितश्री लालचंदजीभाई लेते थे, उसके पहले पण्डितश्री रामजीभाई लिया करते थे। श्री रामजीभाई ने अनेक वर्षों तक उस कक्षा को पढ़ाया। श्री लालचन्दभाई ने एक साल तक वह कक्षा ली; लेकिन कुछ लोगों ने उनके खिलाफ षडयंत्र करके उनसे वह कक्षा छुड़वाई थी। वे लोग मेरे विरुद्ध भी सक्रिय थे।

उस कक्षा में मैंने यह कहा कि – **''सामान्य-शास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान भवेत्।''** अर्थात् सामान्य की अपेक्षा विशेष बलवान होता है। चूँकि 'विशेष' पर्याय के अर्थ में और 'सामान्य' द्रव्य के अर्थ में भी होता है; इसलिए उन लोगों ने गुरुदेवश्री के पास जाकर मेरी यह शिकायत की कि डॉ. हुकमचन्दजी, पर्याय को दृष्टि के विषय में शामिल करते हैं, पर्याय पर ज्यादा वजन देते हैं। उन्होंने आज कक्षा में कहा कि द्रव्य-गुण की अपेक्षा पर्याय ज्यादा महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि सामान्य की अपेक्षा विशेष अधिक बलवान होता है।''

फिर गुरुदेवश्री ने मुझे बुलाया। उन्होंने स्पष्टरूप से मुझसे कुछ नहीं कहा, लेकिन समयसार की ४९वीं गाथा में जो अव्यक्त के छह बोल आते हैं, उसमें से तीसरे बोल की पंक्ति निकाल कर मेरे सामने रखी और पूछा कि इसका क्या अर्थ है ?

उसमें ऐसा लिखा था कि चित्सामान्य में चैतन्य की समस्त व्यक्तियाँ निमग्न हैं। **व्यक्तियाँ माने विशेष अर्थात् पर्याय होता है और 'चित्सामान्य' माने आत्मा होता है।** इसप्रकार मेरा अभिप्राय जानने के लिए गुरुदेवश्री ने मुझसे इस पंक्ति का अर्थ पूछा।

मैं इस बात को अच्छी तरह जानता था कि 'गुरुदेवश्री को इसका अर्थ ख्याल में नहीं है' – यह बात तो हो नहीं सकती अर्थात् 'मुझे बड़ा पण्डित समझ कर मुझसे यह पूछ रहे हैं' – ऐसा तो हो ही नहीं सकता। यह बात तो निश्चित ही थी कि वे मेरी परीक्षा ले रहे थे। आजतक उन्होंने कभी परीक्षा नहीं ली थी; इसलिए मैंने सोचा कि जरूर हवा में कुछ गंध है। इसलिए मैंने गुरुदेवश्री से कहा –

''मैं इसका अर्थ शाम को या कल बताऊँगा।''

यद्यपि उस संबंध में मुझे शास्त्रों में कुछ देखना नहीं था; क्योंकि पहले से मेरा सब विषय देखा हुआ था और उस विषय पर मैंने गुरुदेवश्री के प्रवचन भी बहुत पढ़े थे; तथापि मैं यह

जानना चाहता था कि ऐसा क्या हुआ, जिसके कारण गुरुदेवश्री को मुझसे यह पूछने का विकल्प आया।

जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि कुछ लोगों के भड़काने पर गुरुदेवश्री ने मुझे बुलाया था, तब मैंने सोचा कि ''चित्सामान्य में चैतन्य की समस्त व्यक्तियाँ निमग्न हैं'' इसका अर्थ बताने के बजाय मुझे गुरुदेवश्री को **'सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान् भवेत्'** इस कथन की अपेक्षा स्पष्ट कर देना चाहिए।

फिर अगले दिन जब मैं गुरुदेवश्री के पास गया तो मैंने कहा कि **''सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान् भवेत्''**, यह तो आचार्य भगवन्त का वाक्य है और इसका अर्थ यह होता है कि सामान्य कथन की अपेक्षा विशेष कथन बलवान होता है।

टोडरमलजी ने इस वाक्य को उद्धृत किया है, मैंने उसकी भी सारी अपेक्षायें गुरुदेवश्री के सामने रख दीं; लेकिन उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो गुरुदेवश्री ने कहा – 'ठीक है।' फिर उन्होंने उस कथन का अर्थ नहीं पूछा।

इसप्रकार गुरुदेवश्री के प्रश्न का उत्तर नहीं देकर मैंने वह बात स्पष्ट कर दी। वास्तव में तो उन्होंने वही प्रश्न पूछा था, सिर्फ उसकी भाषा को परिवर्तित कर दिया था।

जगत के लोग भी आपसे पूछना चाहेंगे कुछ और पूछेंगे कुछ; क्योंकि सीधे वही प्रश्न करने में उनके मन में संकोच रहता है; लेकिन जबतक उनको उस प्रश्न का सही जवाब नहीं मिलेगा, जिसके बारे में जिज्ञासा है; तबतक उन्हें संतुष्टि होनेवाली नहीं है अर्थात् चित्त को समाधान मिलनेवाला नहीं है। हम प्रश्न का उत्तर तो दे देंगे, लेकिन उनकी शंका का समाधान नहीं कर पायेंगे।

प्रश्न के उत्तर और शंका के समाधान में बहुत अंतर है। यदि कोई व्यक्ति अपने यहाँ कार्यक्रम में आने का निमंत्रण देते हुए मुझसे यह पूछे कि – आप हमारे यहाँ पधारोगे कि नहीं ? इस प्रश्न के मैं दो उत्तर दे सकता हूँ। एक तो यह कि 'आऊँगा' और दूसरा यह कि 'नहीं आऊँगा'।

'नहीं आऊँगा' सुनकर वह जानेवाला नहीं है, वह मुझसे कहेगा कि नहीं–नहीं, आपको तो आना ही है। यदि मैंने यह कह दिया कि मैं अवश्य आऊँगा तो वह उठकर चला जायेगा। वह तो यही सुनने आया था कि 'अवश्य आऊँगा'। जबतक वह यह नहीं सुनेगा, तबतक उसका समाधान नहीं होगा और उसका आग्रह अर्थात् प्रश्न चालू ही रहेगा।

प्रश्न का उत्तर तो कुछ भी हो सकता है। किसी प्रश्न का उत्तर तो यह भी हो सकता है कि 'इसका उत्तर मुझे नहीं आता है' और यह भी हो सकता है कि 'मैं तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं हूँ।'

'शाह आयोग' में जब इन्दिरा गाँधी से कोई भी प्रश्न पूछा जाता तो वह यही कहती थीं कि मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं हूँ। उसके वकील ने उसको यही वाक्य रटा दिया था।

वह यह भी कहतीं कि यदि आप बाध्य करेंगे तो भी मैं यही जवाब दूँगी और यदि फिर भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य करेंगे तो मैं आप पर केस करूँगी; क्योंकि कानून में यह सब बताया गया है कि किसी भी व्यक्ति से क्या बात पूछी जा सकती है और क्या बात नहीं पूछी जा सकती। कुछ व्यक्तिगत बातें ऐसी होती हैं, जिनके बारे में पूछने का अधिकार अदालत को भी नहीं है।

उनका वकील इस बात को अच्छी तरह जानता था। मंत्रीमण्डल की बैठकों के नियम अनुसार हर मिनिस्टर को गोपनीयता की शपथ लेनी पड़ती है कि वह कोई भी गुप्त बात को प्रगट नहीं करेगा। कैबिनेट की मीटिंग की जो बहस होती है, वह अंतरंग बहस है तो इन्दिरा गाँधी ने कहा कि जो आप जानना चाहते हैं, उसको गुप्त रखने के लिए मैंने कसम खाई है। यदि मुझे प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य किया जाता है तो कानून के हिसाब से अदालत मेरे से वह कानून तुड़वा रही है। यदि मुझे इसके लिए बाध्य किया जाता है तो बाध्य करने का केस आप पर भी चल सकता है।

इसप्रकार प्रश्न का उत्तर तो यह भी हो सकता है कि मैं तुम्हारें इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं हूँ।

अधकचरे लोग इस बात को नहीं समझते हैं और हर प्रश्न का जवाब उल्टा–सीधा कुछ भी दे देते हैं और फिर कहीं न कहीं अटक जाते हैं। अरे भाई ! यह जरूरी नहीं है कि हमें जिस प्रश्न का उत्तर नहीं आता है, उसका उत्तर हम दें ही। यदि वास्तव में उस प्रश्न का उत्तर नहीं आता है तो हमें यह कह देना चाहिए कि हमें उसका उत्तर नहीं आता है। यदि ऐसा कहने से आपके अभिमान को ठेस लगती है तो यह कह देना चाहिए कि इस बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। उत्तर तो यह भी है; लेकिन यह शंका का समाधान नहीं है।

इसप्रकार 'प्रश्न का उत्तर' और 'शंका का समाधान' इन दोनों में बहुत अंतर है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...मुम्बई पंचकल्याणक)

तलोद, पण्डित अतुलभाई आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों के अतिरिक्त शताधिक विद्वानों का सानिध्य मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि के प्रतिष्ठाचार्य ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ एवं सह-प्रतिष्ठाचार्य श्री सुभाषभाई शेठ बांकानेर थे। संपूर्ण प्रतिष्ठा विधि पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित अनिलजी धवल, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई। कार्यक्रम के अन्तिम दिन ब्र. ब्रजलालजी शाह बढवानवाले भी पधारे, जिनके उद्बोधन एवं मान्त्रिक क्रियाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं मंच संचालन, इन्द्रसभा-राजसभा आदि कार्यक्रमों का संयोजन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने रोचकतापूर्वक किया। इसी अवसर पर बढवान भजन मंडली व मलाड भजन मंडली का भी विशेष सहयोग रहा।

पञ्चकल्याणक से एक दिन पूर्व दिनांक 16 मई को कार्यक्रम स्थल की भूमि का शास्त्रोक्त विधि-विधान से प्रतिष्ठाचार्यजी द्वारा भूमिशुद्धि कराई गई।

बालक शान्तिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती चन्द्राबेन-मधुभाई शाह को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री नेमिषभाई-रेखाबेन शाह मुम्बई, ईशान इन्द्र श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद एवं महायज्ञनायक श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई थे।

इस महोत्सव में शान्तिनाथ भगवान, सीमंधर भगवान, बाहुबली भगवान, महावीर भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। साथ ही जिनमंदिर में जिनवाणी की स्थापना, कलशारोहण, ध्वजारोहण आदि भी संपन्न हुये। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही।

इस पंचकल्याणक की मुख्य विशेषता यह रही कि महोत्सव के दौरान गुरुदेवश्री के प्रवचन, उनकी जीवन गाथा दर्शक फिल्मों का प्रसारण, बहिनश्री की तत्त्वचर्चा, माननीय प्रवचनकारों द्वारा शास्त्र स्वाध्याय, जिनेन्द्र-भक्ति और जैनधर्म के पावन सन्देशों को अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी द्वारा अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया गया। इस महोत्सव का लाईव प्रसारण इन्टरनेट पर भी किया गया, जिसे देश के लाखों लोगों ने देखा। महोत्सव के दौरान गुरुदेवश्री के जीवनप्रसंगों को प्रदर्शित करती हुई एक भव्य आर्ट गैलेरी का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के प्रख्यात चित्रकारों और शिल्पकारों द्वारा निर्मित चित्रपटों एवं शिल्पकृतियों को प्रदर्शित किया गया।

इस सम्पूर्ण महोत्सव को भव्यरूप से सम्पन्न कराने का श्रेय श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट विलेपार्ला और महोत्सव के प्रमुख मधुभाई शाह के साथ मुख्य ट्रस्टी और कार्यकर्ताओं - श्री संजीवभाई कोठारी, श्री अक्षयभाई दोशी, श्री हितेनभाई शेठ, श्री के.सी. शाह, श्री इन्द्रवदनभाई के. शाह, श्री रोहितभाई मालिया, श्री जयन्तभाई ब्रोकर, श्री अनुजभाई शेठ, श्री समीरभाई डेलीवाला, श्री राजीवभाई दोशी श्री मेहुलभाई शाह और डॉ. लीनाबेन मोदी इत्यादि महानुभावों को जाता है, जिन्होंने दिनरात अथक परिश्रम करके इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

इसप्रकार जिनशासन की विश्वव्यापी प्रभावना करता हुआ यह महामहोत्सव अत्यंत भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...मेरठ शिविर)

अलीगढ, पण्डित धर्मवीर सिंह जैन वीर ऑटो, श्री सौरभजी जैन, श्री कीमतीलालजी जैन जैननगर, श्री राजेन्द्रजी जैन जैननगर, श्री देवेन्द्रजी जैन जैननगर, श्री रमेशजी जैन जैननगर, श्री नरेशजी जैन जैननगर, श्री संजयजी, श्री प्रियांशुजी दी अध्ययन स्कूल, सुमनजी जैन, श्रीमती मोतीलाल जैन आदि देश के अनेक विशिष्ट महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने दिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण जैन शिक्षा सदन की बालिकाओं ने किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि अध्यात्म विद्या को संगमरमर के पत्थरों पर खुदवाकर सुरक्षित नहीं किया जा सकता; अपितु कोमलमति बालकों में तत्वज्ञान को प्रतिष्ठित करने पर ही जिनधर्म सुरक्षित रह सकता है। इसके अतिरिक्त अनेक महानुभावों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अंत में आयोजन समिति के अध्यक्ष ने सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने किया। ●

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127